विज्ञान प्रकाश वर्ष : 23, अंक 3, जुलाई–सितम्बर 2025 ISSN : 1549-523-X

भारतीय दृष्टि में सृष्टि शब्द का समन्वय

विज्ञान और प्रकाश के बोध में अनेक प्राकृतिक एवं अलौकिक सत्ताभूत जिज्ञासाएँ आन्दोलित करती हैं – मानव मन को और उसकी चेतना को। इस जगत् का कारण कौन है, जीवन का आधार क्या है, किसी के होने की आधारभूत संकल्पनाएँ कैसी हैं, सृष्टि और नाश की प्रक्रिया क्यों होती है – ऐसे अनेक अनगिनत प्रश्न हैं, जिनके उत्तर का औन्मुख्य सृष्टि के कारणभूत तत्त्वों पर विचार करने के लिए अभिप्रेरित करता है। सृष्टि की उत्पत्ति हमेशा से मानव के लिए एक जिज्ञासा का विषय रहा है। 'सृष्टि' शब्द की व्युत्पत्ति संस्कृत के 'सृज्' धातु में 'क्तिन्' प्रत्यय के संयोग से हुई है, जिसका अर्थ है **रचना करना** या **उत्पन्न करना**। अत: 'सृष्टि' का सीधा अर्थ है – **रचना या उत्पत्ति।**

सृष्टि की एक निरन्तर परम्परा है। वह पूर्व में अनन्तवार होती रही, वर्तमान में चल रही है और भविष्य में होगी। युगानुसार कुछ अन्तर के साथ ह्रास–वृद्धि होने पर भी सृष्टि की मूल संरचना वही रहती है। इसका अत्यन्ताभाव भी नहीं होता। वस्तुत: इसके पदार्थ अपने मूल कारण में लीन हो जाते हैं और प्रसुप्त अवस्था में रहते हैं। युगानुसार सभी पदार्थ पुन: अपने मूल कारण से प्रकट हो जाते हैं। यही विज्ञान का भी मत है। सृष्टि का इतिहास जानना मनुष्य के लिए अशक्य है। इसका कारण यह है कि उपर्युक्त सद्ग्रन्थ एवं दर्शन के अनुसार जिस सृष्टि में हम आज विद्यमान हैं वह पूर्व में कभी नहीं थी अथवा भविष्य में कभी नहीं होगी; ऐसा नहीं है। हम केवल उस परम्परा के इतिहास के स्वभाव को आकलित कर वर्तमान को समझने का प्रयास कर सकते हैं।

सृष्टि के विषय में विभिन्न दार्शनिक प्रस्थानों में संघनित विमर्श हुआ है। इनमें सामान्यत: सृष्टि के आधार के रूप में चेतन और प्रकृति (अव्यक्त) की चर्चा देखने को मिलती है। कहीं ब्रह्म और व्यक्त की कारणभूत अव्यक्त प्रकृति, कहीं शिव और शक्ति का सामरस्य, कहीं ब्रह्म और माया, कहीं पुरुष और प्रकृति के रूप में इन्हें प्रकाशित किया गया है। सृष्टि के संबंध में लगभग सभी दार्शनिक प्रस्थानों में पञ्च महाभूतों की भूमिका विशेष रूप से उल्लिखित है – पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु एवं आकाश। सृष्टि के सम्बन्ध में ऋग्वेद में हिरण्यगर्भसूक्त, नासदीयसूक्त और पुरुषसूक्त आदि अनेक सूक्त उपनिबद्ध हैं।

ऋग्वेद का नासदीयसूक्त (10.129) सृष्टि की उत्पत्ति से पहले की स्थिति का वर्णन करता है। यह बताता है कि उस समय न तो अस्तित्व था, न ही अनस्तित्व, बल्कि एक अंधकारमय, अप्रकाशित और बिना रूप वाला पदार्थ था। फिर परमात्मा के मन में सृष्टि करने की इच्छा (काम) उत्पन्न हुई, उसी मन से बीज अर्थात् सृष्टि का कारण उत्पन्न हुआ, जो सृष्टि का आरम्भ बिन्दु था। नासदीयसूक्त सृष्टि के उद्गम को एक रहस्य के रूप में प्रस्तुत करता है, जो आधुनिक विज्ञान के कई सिद्धान्तों से मेल खाता है। ऋग्वेद (10.190.1) का वचन है कि परमेश्वर के दीप्तिमान तप से ऋत और सत्य उत्पन्न हुए। उससे आकाश उत्पन्न हुआ। आकाश से संवत्सर उत्पन्न हुआ। परमेश्वर ने दिन और रात बनाए। सूर्य और चन्द्र को भी बनाया। यह सब उसने पूर्वकल्प के अनुसार ही बनाये। उसने पृथ्वी, अन्तरिक्ष और द्युलोकों का भी निर्माण किया।

मत्स्यपुराण (2/22:142/36) के अनुसार प्रत्येक मन्वन्तर के अन्त में पृथ्वीजलमग्न हो जाती है तथा पुन: अगले मन्वन्तर के प्रारम्भ में पृथ्वी के कुछ भाग जल से निकल जाते हैं जिस पर पुन: जीव, जन्तु एवं वृक्ष आदि उत्पन्न हो जाते हैं। मनु पुन: सन्तति उत्पन्न करते हैं, जिसकी परम्परा उस मनुकाल तक चलती है। इसके अन्त में पुन: पृथ्वी जलमग्न हो जाती है। इसे खण्ड प्रलय कहते हैं। यहाँ जलमय होने का अर्थ है कि एक सर्वोच्च पर्वत पर मनु आश्रित रह कर जल के घटने एवं सूखने की प्रतीक्षा करते हैं। इस प्रकार 14 मनुकाल व्यतीत होने पर कल्पकाल का अन्त होता है, जो ब्रह्मा का एक दिन माना जाता है। इस समय प्राकृतिक प्रलय होती है। जब ब्रह्मा की आयु समाप्त होती है तो महाप्रलय होती है। इस समय पृथ्वी सहित सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड नष्ट हो जाता है। विष्णुपुराण (6/1/3) में इसका वर्णन है।

आधुनिक वैज्ञानिक दृष्टिकोण से सृष्टि की उत्पत्ति लगभग 13.8 अरब साल पहले बिग बैंग सिद्धान्त से हुई, जब एक अत्यन्त सघन और गर्म बिन्दु (सिंगुलैरिटी) में अचानक विस्तार हुआ। इस विस्तार के साथ अन्तरिक्ष और समय की शुरुआत हुई, और ब्रह्माण्ड के ठण्डे होने पर कणों से तारे, आकाशगंगाएँ और ग्रह बने। पहले, पूरा ब्रह्माण्ड एक एकल, अविश्वसनीय रूप से गर्म और सघन बिन्दु था, जिसे 'सिंगुलैरिटी' कहा जाता था। इस बिन्दु में एक विशाल विस्फोट हुआ, जो ब्रह्माण्ड का विस्तार है। जैसे–जैसे ब्रह्माण्ड का विस्तार हुआ और ठण्डा हुआ, उप–परमाणु कणों ने मिलकर परमाणु बनाए। ये परमाणु आकाशगंगाओं, तारों और ग्रहों का निर्माण करने के लिए गुरुत्वाकर्षण के प्रभाव में एक साथ आए। हमारा सौर मण्डल और पृथ्वी भी इसी प्रक्रिया से बने हैं। पृथ्वी पर जीवन की उत्पत्ति एक जटिल रासायनिक प्रक्रिया मानी जाती है। प्रारम्भिक रासायनिक अणुओं ने मिलकर बड़े कार्बन अणु बनाए, जो अन्ततः निर्जीव से सजीव में बदल गए। ब्रह्माण्डीय कॉस्मिक माइक्रोवेव बैकग्राउंड (सी.एम.बी.) से लेकर आकाशगंगाओं के वितरण तक के अवलोकन बिग बैंग सिद्धान्त का समर्थन करते हैं। वैज्ञानिक अभी भी पूरी तरह से यह नहीं समझ पाए हैं कि सृष्टि वास्तव में कैसे शुरू हुई। बिग बैंग से ठीक पहले क्या था, यह अभी भी एक रहस्य है। आवश्यकता है कि इन शास्त्रीय और वैज्ञानिक आधारों के सामंजस्य से नये शोध को प्रोत्साहित किया जाए, जो समग्रता में विषयों को पुनःस्थापित कर सकें।